नमाज़

दुरुस्त कीजिये

मुसल्मान पर नमाज़ का पढ़ना फर्ज़ हे तो नमाज़ का सीखना भी फर्ज़ हे। इस मुख्तसर मज्मूऐ मे नमाज़ की अहम्मियत, नमाज़ की शराइत, फराइज़, वाजिबात, सुन्नतें, ओर नमाज़ का सहीह व मस्नून तरीक़ा फिक़्ह की मुख्तलिफ किताबों से बयान किया हे; इस मज्मूऐ को पढ़ कर बल्के सब चीज़ें याद कर के अपनी नमाज़ को दुरूस्त कीजिये ओर बेहतर हे के किसी आलिम के पास जा कर अमली तोर पर भी अपनी नमाज़ का जाइज़ा लीजिये। अल्लाह पाक हम सब को कामिल नमाज़ पढ़ने की तौफीक़ अता फरमाऐ। आमीन।

मुफ्ती असरारुल ह़क़ हनफी व्यारवी

@AaajkeeTaaleem

नमाज़ की अहम्मियत (महत्वता)

{ ह़दीषे पाक }

ऐक हदीषे पाक का खुलास़ा (सार) यह हे की रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : इस्लाम पांच बातों पर आधारित हे; सब से पेहले ला इलाह इल्लल्लाह मुह़म्मदुर् रसूलुल्लाह की गवाही देना, यअनी इस बात की गवाही देना के अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं हे ओर हज़रत मुह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हें। ओर नमाज़ क़ाइम करना ओर ज़कात अदा करना ओर ह़ज करना ओर रमज़ान के रोज़े रखना।

(बुख़ारी शरीफ)

फाइदह

इस ह़दीषे पाक मे इस्लाम के सब से अहम उसूल को बयान किया गया हे इस तरह के ये पांचों बातें इस्लाम के पांच सुतून की तरह हें ओर इन पांच बातों मे सब से ज़ियादह अहम ओर जरूरी ईमान हे जिस के बगैर कोई इन्सान मुसल्मान ओर मोमिन नहीं हो सकता। ओर दूसरे नंबर पर नमाज़ को बयान किया हे जिस के बगैर कोइ मोमिन, कामिल मोमिन नहीं हो सकता। इसी लिये उलमाऐ किराम फरमाते हें के ईमान के बाद सब से मुक़द्दम नमाज़ हे। इस से नमाज़ की अहम्मियत का पता चलता हे के नमाज़ किस क़दर अहम ओर जरूरी इबादत हे।

{ ह़दीषे पाक }

ऐक ओर हदीष का खुलास़ा हे हज़रत अबूज़र र.अ. रिवायत करते हें के रसूलुल्लाह ﷺ ऐक मर्तबह सर्दी के मौसम मे बाहर तशरीफ लाऐ, ओर पत्ते दरख़्तों से गिर रहे थे, आप ﷺ ने दरख़्त की दो टेहनियां (डालीयां) हाथ मे ली उस के पत्ते ओर भी गिरने लगे। आप ﷺ ने फरमाया : ऐ अबूज़र ! मुसल्मान बंदा जब इख़्लास से अल्लाह की खुशनूदी के लिये नमाज़ पढ़ता हे तो उस के गुनाह ऐसे ही गिर जाते हें जैसे इस दरख़्त से पत्ते गिर रहे हें।

(मिश्कात अल मस़ाबीह)

फाइदह

सर्दी के मौसम मे दरख़्तों के पत्ते ऐसी कषरत से गिरते हें के बअज़ दरख़्तों पर तो ऐक भी पत्ता नहीं रेहता। चुनांचे इस हदीष के मुताबिक़ इख़्लास के साथ नमाज़ पढ़ने का अषर भी यही हे के नमाज़ी के सारे गुनाह मुआफ हो जाते हें; ऐक भी नहीं रेहता। लेकिन क़ुर्आनी आयात ओर दुसरी अहादीष की रोशनी मे उलमाऐ किराम फरमाते हें के नमाज़ वग़ैरह इबादात से छोटे गुनाह मुआफ होते हें, बड़े गुनाह तौबह के बग़ैर मुआफ नहीं होते। इस लिये नमाज़ के साथ साथ तौबह ओर इस्तिग़फार भी करते रेहना चाहिये। लेकिन अगर अल्लाह पाक अपने फज़्ल से बड़े गुनाह भी मुआफ फरमा दे तो दूसरी बात हे।

बहरहाल इस हदीषे पाक से नमाज़ की अहम्मियत ओर नमाज़ की फज़ीलत मालूम होती हे के इख़्लास के साथ बंदा नमाज़ पढ़ता हे तो उस के गुनाह मुआफ हो जाते हें।

{ हदीषे पाक }

ऐक ओर हदीषे पाक का खुलासा हे के जो मुसल्मान बंदा अच्छी तरह वुज़ू करे, फिर अल्लाह के सामने खड़े हो कर दिल की पूरी तवज्जुह ओर यकसूई के साथ दो रकआत नमाज़ पढ़े तो उस के लिये जन्नत जरूर वाजिब हो जाऐगी।

(मुस्लिम शरीफ)

फाइदह

इस हदीष से मालूम हुवा के नमाज़ की मुकम्मल तोर पर अदाइगी जन्नत मे जाने का यक़ीनी जरिया हे, इस लिये इसे ज़रूर अपनाना चाहिये।

{ हदीषे पाक }

ऐक हदीषे पाक मे हे के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया : नमाज़ का छोड़ना आदमी को कुफ्र से मिला देता हे।

(मुस्लिम शरीफ)

फाइदह

ये कितनी भारी ओर सख्त बात हे नमाज़ को जानबूझ कर छोड़ने वाले के लिये। अगरचे उलमा ने इस की तावील की हे, लेकिन जिस के दिल मे नबीऐ करीम ﷺ के इरशाद की अहम्मियत होगी वोह भला नमाज़ छोड़ सकता हे ?

{ हदीषे पाक }

ऐक हदीषे पाक का खुलासा हे के रसूलुल्लाह ﷺ ने ऐक मर्तबह नमाज़ का तज़किरा फरमाते हुवे इरशाद फरमाया : जो शख़्स नमाज़ का ऐहतिमाम करे तो नमाज़ उस के लिये क़ियामत के दिन

नूर होगी ओर हिसाब पेश होने के वक़्त हुज्जत होगी ओर छुटकारे का सबब होगी। ओर जो शख़्स नमाज़ का ऐहतिमाम न करे उस के लिये क़ियामत के दिन न नूर होगा ओर उस के पास न कोई हुज्जत होगी ओर न कोई छुटकारे का सबब। उस का हशर फिरओन, हामान ओर उबय इब्ने खलफ के साथ होगा।

(तरग़ीब)

{ हदीषे पाक }

नबीऐ करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया : जो शख़्स अज़ान की आवाज़ सुने ओर किसी उज़र के बग़ैर नमाज़ के लिये न जाऐं, वहीं पढ़ ले तो वोह नमाज़ क़बूल नहीं होती। सहाबा र.अ. ने अर्ज़ किया उज़र से क्या मुराद हे ? फरमाया : बीमारी हो या ख़ौफ हो।

(सुनने अबू दाऊद)

फाइदह

मतलब ये हे फर्ज़ तो अदा हो जाऐगा मगर नमाज़ पढ़ने पर जो षवाब मिलता हे उस से महरूम रहेगा। ये कितनी महरूमी की बात हे ! इस लिये नमाज़ तो दूर जमाअत की नमाज़ भी नहीं छोड़नी चाहिये।

नमाज़ की अहम्मियत व फज़ीलत ओर नमाज़ छोड़ने पर सज़ा व अज़ाब इसी तरह जमाअत की पाबंदी से मुतअल्लिक़ बेशुमार अहादीष, हदीष की किताबों मे मौजूद हें। ऊपर सीर्फ नमूने के तौर पर छे अहादीष नकल की हे। समझदार के लिये तो सिर्फ ऐक हदीष भी काफी होती हे।

अब उन बातों को पेश किया जा रहा हे जिन से नमाज़ सहीह ओर मुकम्मल होती हे।

नमाज़ की शराइत

यअनी नमाज़ी की नमाज़ के सहीह होने के लिये नमाज़ शुरू करने से पेहले जिन बातों का ऐहतेमाम करना ज़रूरी हे। इन को शराइत ओर अरकान भी कहा जाता हे। ये शराइत सात हें।

1 बदन का पाक होना।

ह़क़ीक़ी ओर हुकमी दोनो तरह की नापाकी से बदन का पाक होना ज़रूरी हे। हक़ीक़ी यअनी नजर आने वाली नापाकी जैसे पेशाब, पाखाना, ख़ून वगैरा कोई नापाक चीज़ बदन पर लगी हुइ न हो। ओर हुक्मी यअनी नजर न आने वाली नापाकी के जिस से पाक होने के लिये शरीअत ने ग़ुस्ल ओर वुज़ू का हुकम दिया हे। यअनी ग़ुस्ल ओर वुज़ू के साथ होना।

2 कपड़ों का पाक होना।

कपड़ों पर कोई नापाकी लगी हुई न हो।

3 जगह का पाक होना।

जिस जगह पर नमाज़ पढ़नी हो उस का पाक होना।

4 सतर का छुपाना।

यअनी मर्द का नाफ (नाभी) से लेकर घुटने तक का बदन ओर आज़ाद ओरत का चेहरा, हथेली ओर क़दम के अलावह पूरा बदन सतर हे। इतने हिस्से का ढंका हुवा होना शर्त हे।

5 क़िब्ले की तरफ रुख़ करना।

जब क़िब्ले की जिहत (दिशा) मालूम न हो तो लोगों से मालूम कर लें, और कोई बतलाने वाला भी न हो तो दूसरे वसाइल (जैसे क़िब्लानुमा) या क़राइन (इशारात) से मालूम कर लें। ओर अगर मालूम करने का कोई जरिया न हो तो तह़र्री कर लें। यअनी क़िबले के बारे मे ग़ौर व फिक्र करें के किस तरफ क़िब्ला हो सकता हे ? जिस तरफ का ख्याल गालिब हो जाऐ उसी तरफ रुख़ कर के नमाज़ पढ़ लें।

6 नमाज़ का वक़्त होना।

जिस नमाज़ का जो वक़्त शरीअत मे मुक़र्रर हे उसे उसी वक़्त मे पढ़ना शर्त हे। वक़्त से पेहले नमाज़ शुरू करने या पढ़ लेने से नमाज़ नहीं होती। इसी तरह मकरूह वक़्त मे भी नमाज़ न पढ़ें। यअनी तुलूऐ आफताब, ज़वाले आफताब ओर ग़रूबे आफताब के वक़्त कोई नमाज़ न पढ़ें। इन तीन अवक़ात मे कोई क़ज़ा नमाज पढ़े तो वो भी अदा नहीं होगी। सिवाऐ उसी दिन की असर की नमाज़ के, उसी दिन की असर की नमाज़ गुरूबे आफताब तक भी पढ़ने की गुन्जाइश हे।

7 निय्यत करना।

नमाज़ शरू करने से पेहले यअनी तकबीरे तहरीमह से पेहले ही निय्यत करना जरूरी हे। नमाज़ की निय्यत इस तरह होती हे के नमाज़ी दिल मे पक्का इरादह करें के में फुलां नमाज़ अदा करने जा रहा हूं, मषलन यूं निय्यत करे के (में फज्र की फर्ज़ नमाज़

पढ़ रहा हूं) या जैसे (में वित्र की वाजिब नमाज़ पढ़ रहा हूं) वगैरह। अगर जमाअत के साथ पढ़ रहे हो तो इक़तिदा की निय्यत करना भी जरूरी हे। मषलन यूं निय्यत करे के (में फज्र की फर्ज़ नमाज़ पढ़ रहा हूं इमाम के पीछे) यअनी निय्यत मे दो बातों का खयाल करना पड़ेगा; ऐक ये के कोन सी नमाज़ पढ़ रहा हूं, ओर दूसरी बात ये के इमाम के पीछे पढ़ रहा हूं।

नमाज़ के फराइज़

यअनी वो चीज़ें जो नमाज़ मे फर्ज़ ओर जरूरी हे; इन मे से कोई ऐक भी जानबूझ कर या भूल से छुट जाऐ तो नमाज़ नहीं होती; बल्के उस नमाज़ को दोबारा पढ़ना जरूरी होगा। नमाज़ मे छे (6) फर्ज़ हें।

1 तहरीमह केहना।

यअनी जिक्र के कलिमात (जैसे : अल्लाहु अकबर) से नमाज़ शुरू करना।

2 क़ियाम करना।

यअनी खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना। ये क़ियाम फर्ज़ ओर वाजिब नमाज़ों मे फर्ज़ हे।

3 क़िराअत करना।

यअनी फर्ज़ नमाज़ों की दो रकआत मे ओर सुन्नत, नफल ओर वित्र की सब रकआत मे क़ुर्आने करीम की कोई आयत पढ़ना।

4 रुकूअ करना।

5 सजदह करना।

6 तशह्हुद पढ़ने की मिक़दार आखरी क़अदह मे बैठना।

दो रकआत वाली नमाज़ मे दो रकआत के बाद, तीन रकआत वाली नमाज़ मे तीन रकआत के बाद ओर चार रकआत वाली नमाज़ मे चार रकआत के बाद बैठने को आखरी क़अदह कहा जाता हे; इस मे कम से कम इतनी देर बैठना फर्ज़ हे जितनी देर मे तशह्हुद (अत्तहिय्यात) पढ़ सकते हें।

नमाज़ के वाजिबात

यअनी वो चीज़ें जो नमाज़ मे वाजिब ओर जरूरी हे; इन मे से किसी ऐक वाजिब को भी जानबूझ कर छोड़ दिया तो नमाज़ नहीं होगी, वोह नमाज़ दोबारह पढ़नी पड़ेगी। ओर अगर कोई ऐक या ऐक से ज़ियादह भूल से छूट गया तो सजदऐ सहव कर लेने से नमाज़ सहीह हो जाऐगी, दोबारह पढ़ने की जरूरत नहीं होगी; लेकिन अगर सजदऐ सहव करना भी भूल जाऐ ओर सलाम के बाद नमाज़ के मुनाफी कोई काम भी कर लिया (जैसे बात कर ली या सीना क़िब्ले की तरफ से फेर लिया) तो अब उस नमाज़ को दोबारह पढ़ना वाजिब होगा। खूब समझ लो।

नमाज़ के वाजिबात ये हें।

01 **नमाज़ शुरू करते वक़्त खास "अल्लाहु अकबर" के लफज़ से तहरीमह करना।**

अल्लाहु अकबर के अलावह किसी ओर जिक्र के कलिमात (जैसे : अल्लाहु अअज़म) से नमाज़ शुरू करना मकरूहे तहरीमी हे।

02 **इमाम ओर अकेले नमाज़ पढ़ने वाले के लिये फर्ज़ की दो रकअतों मे ओर वित्र, सुन्नत ओर नफ्ल की तमाम रकअतों मे सुरऐ फातिहा पढ़ना।**

03 **इमाम ओर अकेले नमाज़ पढ़ने वाले के लिये सूरऐ फातिहा के साथ फर्ज़ की दो रकअतों मे ओर वित्र, सुन्नत ओर नफ्ल की तमाम रकअतों मे सूरत मिलाना।**

यअनी सुरऐ फातिहा के साथ कुर्आन की ओर कोई भी सूरत या कम से कम तीन आयतें या ऐक बड़ी आयत पढ़ना।

04 **फर्ज़ की पेहली दो रकअतों को क़िराअत के लिये मुतअय्यन करना।**

यअनी तीन रकआत या चार रकआत वाली नमाज़ मे पेहली दो रकअतों मे क़ुर्आन पढ़ना वाजिब हे। किसी ने पेहली रकआत को छोड़ कर दूसरी तीसरी मे या पेहली दूसरी रकआत छोड़ कर तीसरी चौथी रकआत मे क़ुर्आन पढ़ा तो उस ने वाजिब छोड़ दिया।

05 ## सूरऐ फातिहा को क़िराअत से पेहले पढ़ना।

यअनी सूरऐ फातिहा ओर उस के साथ पढ़ा जाने वाला क़ुर्आन (चाहे कोई सूरत हो या तीन आयतें हो या ऐक बड़ी आयत हो) के दरमियान तरतीब का होना वाजिब हे; पेहले सुरऐ फातिहा पढ़ी जाऐगी इस के बाद फिर क़ुर्आन का ओर हिस्सा पढ़ा जाऐगा।

06 ## फर्ज़ नमाज़ की पेहली दो रकअतों मे से हर रकआत मे सुरऐ फातिहा सिर्फ ऐक मरतबह पढ़ना।

यअनी ऐक मरतबह सुरऐ फातिहा पढ़ने के बाद मुसल्सल दोबारह सूरऐ फातिहा न पढ़ें। बल्के ऐक मरतबह सुरऐ फातिहा पढ़ने के बाद दूसरी कोई सूरत या आयतें पढें।

07 ## फज्र, जुमूआ, इदैन, तरावीह ओर वित्र की सब रकआत मे ओर मग़्रिब व इशा की पेहली दो रकअतों मे इमाम के लिये ऊंची आवाज़ से क़िराअत करना।

08 ## मग़्रिब की तीसरी रकआत मे ओर इशा की तीसरी चौथी रकआत मे ओर ज़ोहर व असर की सब रकआत मे ओर दिन के वक़्त (बग़ैर जमाअत के) पढ़ी जाने वाली सुन्नत व नफल मे आहिस्ता क़िराअत करना।

09 नमाज़ के अफआल मे तअदील करना।

नमाज़ के अफआल जैसे क़ियाम, रुकूअ, क़ौमह, सजदह, जलसा, क़अदह वग़ैरह को सुकून ओर इत्मीनान से अदा करना; इस तौर पर के बदन के अअज़ा साकिन हो कर अपनी जगह पर ठहेर जाऐ।

10 क़ौमह करना।

यअनी रुकूअ से उठ कर सीधा ख़ड़ा होना।

11 सजदे मे पेशानी के साथ नाक भी ज़मीन पर टेकना।

12 हर रकआत मे दोनों सजदों को लगातार करना।

यअनी दोनों सजदों के दरमियान नमाज़ का कोई ओर रुक्न अदा न करें।

13 जल्सह करना।

यअनी दोनों सजदों के दरमियान बैठना।

14 पेहला क़अदह करना।

तीन या चार रकआत वाली नमाज़ मे दो रकआत के बाद बैठने को पेहला क़अदह कहा जाता हे; इस मे इतनी देर बैठना वाजिब हे जिस मे तशह्हुद (अत्तहिय्यात) पढ़ी जा सके।

15 पेहले क़अदे ओर आखरी क़अदे मे दोनों मे तशह्हुद (अत्तहिय्यात) पढ़ना।

16 तीन या चार रकआत वाली नमाज़ मे पेहले क़अदे मे तशह्हुद पढ़ने के बाद फोरन ख़ड़े होना।

अगर भूल से तशह्हुद के बाद देर कर दी ओर दुरूद शरीफ पढ़

दिया, चाहे "अला मुहम्मद" तक पढ़ा तो भी वाजिब छूट गया।

17 **नमाज़ के तमाम अअमाल को ऐक के बाद ऐक तरतीब से अदा करना।**

यअनी क़ियाम उसके बाद रुकूअ उस के बाद क़ौमह उस के बाद दो सजदे उस के बाद दूसरी रकअत के लिये ख़ड़े होना वग़ैरह तरतीब से करना। अगर ऐक मर्तबह रुकूअ करने के बाद लगातार दूसरा रुकूअ कर लिया, या दो सजदों के बाद लगातार तीसरा सजदह कर लिया, या ऐक रकअत पूरी करने के बाद ख़ड़े होने की जगह क़अदे मे बैठ गया तो इन सब सूरतों मे ऐक के बाद दूसरे अमल के दरमियान तरतीब न होने की वजह से वाजिब छूट गया।

18 **लफ्ज़ " अस्सलामु " दो मर्तबह केह कर नमाज़ मुकम्मल करना।**

19 **वित्र की तीसरी रकअत मे दुआऐ क़ुनूत पढ़ना।**

20 **दोनों ईद की नमाज़ मे छे ज़ाइद (ज़ियादह की) तकबीरें केहना। तीन पेहली रकअत मे ओर तीन दूसरी रकअत मे।**

21 **दोनों ईद की नमाज़ मे दूसरी रकअत के रुकूअ की तकबीर केहना।**

नमाज़ के अस्ल वाजिबात ओर उन के मुतअल्लक़ात को शामिल कर के ज़िक्र किये हुवे ये 21 वाजिबात क़ाबिले लिहाज़ ओर अहम हे।

(किताबुन् नवाज़िल)

नमाज़ की सुन्नतें

यअनी वो चीज़ें जो नमाज़ मे सुन्नत हें; फर्ज या वाजिब नहीं हें। लेकिन इन पर अमल जरूर करना चाहिये। इन पर अमल करने से नमाज़ कामिल ओर मुकम्मल होती हे। इन सुन्नतों मे से ऐक या ज़ियादह भूल से छूट जाऐ तो न नमाज़ टूटती हे ओर न सजदऐ सहव वाजिब होता हे ओर न गुनाह होता हे; ओर जानबूझ कर छोड़ने से भी नमाज़ नहीं टूटती ओर न सजदऐ सहव वाजिब होता हे, अलबत्ता जानबूझ कर छोड़ने वाला मलामत का मुस्तहि़क़ होता हे। नमाज़ की सुन्नतों की तादाद मे फुक़हा का इख्तिलाफ हे। यहां तअलीमुल इस्लाम से 21 सुन्नतें जिक्र की जा रही हे।

01 तकबीरे तह़रीमह केहने से पेहले दोनों हाथ कानों तक उठाना।

02 दोनों हाथों की उंग्लियां अपने हाल पर खुली हुइ ओर क़िब्ला रुख़ रखना।

03 तकबीर केहते वक़्त सर को न झुकाना।

04 इमाम का तकबीरे तह़रीमह ओर ऐक रुकन से दूसरे रुकन मे जाने की तमाम तकबीरें ज़रूरत के मुताबिक़ बलंद आवाज़ से केहना।

05 सीधे हाथ को बाऐं हाथ पर नाफ के नीचे बांधना।

06 षना पढ़ना।

07 तअव्वुज़ यअनी पूरा "अऊज़ु बिल्लाहि मिनश् शय्तानिर्रजीम" पढ़ना।

08 तस्मियह यअनी "बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम पढ़ना।

09 फर्ज़ नमाज़ की तीसरी ओर चौथी रकआत मे सिर्फ सूरऐ फातिह़ा पढ़ना।

10 आमीन केहना।

11 षना ओर अऊज़ु बिल्लाह ओर बिस्मिल्लाह ओर आमीन सब को आहिस्तह पढ़ना।

12 सुन्नत के मुवाफिक़ क़िराअत करना। यअनी जिस जिस नमाज़ मे जिस क़दर कुर्आने मजीद पढ़ना सुन्नत हे उस के मुवाफिक़ पढ़ना।

13 रुकूअ ओर सजदे मे तीन तीन बार तस्बीह़ पढ़ना।

14 रुकूअ सर ओर पीठ को ऐकसिध मे बराबर रखना, ओर दोनों हाथों की खुली हुई उंग्लियों से घुटनों को पकड़ लेना।

15 क़ौमह मे इमाम का "समिअल्लाहु लिमन् ह़मिदह" ओर मुक़्तदी का "रब्बना लकल्ह़म्द" ओर मुन्फरिद (अकेले नमाज़ पढ़ने वाले) का दोनों केहना।

16 सजदे मे जाते वक़्त पेहले दोनों घुटने फिर दोनों हाथ फिर पेशानी रखना।

17 जल्से ओर क़अदे मे बायां पैर बिछा कर उस पर बेठना, ओर सीधे पैर को इस तरह खड़ा रखना के उस की उंग्लियों के सीरे क़िब्ले की तरफ रहें ओर दोनों हाथ रानों पर रखना।

18 तशह्हुद मे अश्हदु अल्ला इलाह पर कलिमे की उंग्ली से इशारह करना।

19 आखरी क़अदे मे तशह्हुद के बाद दुरूद शरीफ पढ़ना।

20 दुरूद के बाद दुआ पढ़ना।

21 पेहले दाऐं तरफ फिर बाऐं तरफ सलाम फेरना।

इन से ज़ियादह जितनी चीजें जिक्र की जाती हें उन को बअज़ फुक़हा ने मुस्तहब्बात कहा हे ओर बअज़ ने सुन्नत।

नमाज़ का मस्नून तरीक़ा

जब मुस़ल्ले पर खड़े हों।

- नमाज़ शुरू करने से पेहले अपने लिबास ओर हयूअत को शरीअत के मुताबिक़ दुरुस्त कर लो, खुले हुवे सर के साथ नमाज़ पढ़ना या खुली हुई कोहनियों के साथ नमाज़ पढ़ना या हक़ारत वाले कपड़ों मे नमाज़ पढ़ना वगैरह बातें अदब के खिलाफ ओर मकरूह हें।
- हर मुसलमान मर्द पर हर वक़्त टख़ने खुले रखना लाज़िम हे, इस लिये नमाज़ मे खास तौर से टख़्नों को खुला हुवा रखने का ऐहतिमाम करो।
- जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहे हो तो स़फ सीधी रखने का ऐहतिमाम करे, इस की आसान शकल ये हे के हर नमाज़ी अपनी ऐड़ियां सफ के किनारे पर रख लें ओर टखने सीध मे कर लें।
- सफ के दरमियान खाली जगह को पुर कर लो; इस की आसान शकल ये हे की हर नमाज़ी अपना बाज़ु दूसरे नमाज़ी के बाज़ू से मिला ले।
- चेहरा ओर सीना क़िब्ले की तरफ कर लो।
- पैर की उंगलियां भी क़िब्ला रुख रखने का ऐहतिमाम करो, उंगलियों का रुख दाऐं बांऐं न हो।
- मर्द हज़रात दोनों पैरों को मिला कर न रख्खें, बल्के कोई उज़र न हो तो बेहतर हे के उन के दरमियान चार उंगल का फासला रख्खो।

- सीधे खड़े हों, सर या कमर झुका कर न रख्खो।
- नमाज़ शुरू करने से पेहले मुकम्मल खुशूअ ख़ुज़ूअ के साथ अल्लाह के दरबार मे हाज़िर होने का तसव्वुर करो, ओर दुनिया के खयालात ओर वस्वसे दिल से निकाल दो।

जब नमाज़ शुरू करें।

- नमाज़ शुरू करते वक़्त दिल मे इरादह करो के में फुलां नमाज़ पढ़ रहा हूं, बेहतर हे के दिल के इरादे के साथ ज़बान से भी निय्यत के अलफाज़ केह लो; लेकिन ज़बान से निय्यत करना लाज़िम नहीं हे।
- इस के बाद दोनों हाथ कानों तक इस तरह उठाओ के उंग्लियां अपनी हालत पर खुली हुई उपर की तरफ सीधी हों, हथेलियां क़िब्ले की तरफ हों, अंगूठे कानों की लौ के बराबर हों।
- फिर اَللّٰهُ اَكْبَرْ (अल्लाहु अकबर) केहते हुवे दोनों हाथ नाफ के नीचे इस तरह बांध लो के दाऐं हाथ के अंगूठे ओर छोटी उंग्ली से बाऐं हाथ की कलाई पकड़ लो, ओर दरमियान की तीन उंग्लियों को सीधी कर के अपनी हालत पर छोड़ दो।

जब क़ियाम की हालत मे हो।

इस के बाद सब से पेहले पूरी षना पढ़ो। जिस के अल्फाज़ ये हें।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ ، وَتَبَارَكَ اسْمُكَ ،

وَتَعَالٰى جَدُّكَ ، وَ لَا اِلٰهَ غَيْرُكَ ـ

- षना के बाद अऊज़ु पढ़ो। जिस के अलफाज़ ये हें।

اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ۔

- फिर बिस्मिल्लाह पढ़ो, जिस के अल्फाज़ ये हें।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ۔

- फिर सूरऐ फातिहा (अल्हम्दु की सूरत) पढ़ो।
- फिर हर नमाज़ के ऐतेबार से जो सूरत मस्नून हे (या जो भी याद हो) उसे पढ़ो।
- अगर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहे हों तो षना पढ़ने के बाद खामोश हो जाओ, अऊज़ु, बिस्मिल्लाह, सूरत कुछ न पढ़ो, चाहे जो भी नमाज़ हो।
- जब इमाम सुरऐ फातिहा मुकम्मल कर के وَلَا الضَّآلِّیْنَ कहे तो आप मुक़्तदी आहिस्तह से اٰمِیْن (आमीन) कहो।
- खड़े होने की हालत मे बिल्कुल पुरसुकून रहो, बे वजह जिस्म को हरकत मत दो; ओर ऐक पैर पर ज़ोर दे कर खड़े न हो बल्के ऐतेदाल के साथ दोनों पैरों पर बराबर वज़न दे कर खड़े रहो।
- खड़े होने की हालत मे नज़रें सजदे की जगह पर रख्खो।

रुकूअ की हालत।

- क़िराअत खत्म होने के बाद फौरन अल्लाहु अक्बर केहते हुवे रुकूअ मे चले जाओ।
- रुकूअ मे जाते वक़्त हाथों को उठाना मुस्तहब नहीं हे।

- रुकूअ मे इतना झुको के सर ओर पीठ बराबर हो जाऐ।
- सर को कमर के बराबर रख्खो, न इतना ऊंचा के कमर से ऊपर हो जाऐ ओर न इतना झुका हुवा के थोड़ी सीने से लग जाऐ।
- पैर बिल्कुल सीधे रख्खो, उन को झुकाऐ नहीं।
- दोनों पैर बराबर रख्खो, उंग्लियां क़िब्ला रुख रख्खो, दोनों पैरों के दरमियान कम से कम चार उंगल का फासला रख्खो।
- हाथ की उंग्लियां खोल कर घुटनों को अच्छी तरह पकड़ लो।
- बाज़ू सीधे रख्खो, उन को रानों पर मत टेको, ओर न कमान की तरह टेढ़े रख्खो।
- रुकूअ मे नज़रें दोनों क़दमों की पुश्त पर जमाऐ रख्खो।
- <u>ओरत रुकूअ मे सिर्फ इतना झुकेगी के हाथ घुटनों तक पहोंच जाऐ, ओर उंग्लियां खोले बग़ैर सिर्फ घुटनों पर रख देगी।</u>
- रुकूअ मे कम से कम तीन मर्तबह سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ (सुब्ह़ान रब्बियल् अज़ीम) पढ़ो।

क़ौमह की ह़ालत

- रुकूअ के बाद سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ (समिअल्लाहु लिमन् ह़मिदह) केहते हुवे सीधे खड़े हो जाओ, ज़रा भी झुके हुवे मत रहो।
- फिर رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ (रब्बना लकल्ह़म्द) कहो।
- अगर आप जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहे हों तो "समिअल्लाहु लिमन ह़मिदह" न कहो, सिर्फ "रब्बना लकल्ह़म्द" कहो
- क़ौमह की ह़ालत मे हाथ मत बांधो, बल्के अपनी हालत पर छोड़े हुवे रख्खो।

- क़ौमह मे जल्दी मत करो, बल्के इतनी देर ज़रूर खड़े रहो के बदन का हर हिस्सा अपनी जगह पुरसुकून हो जाऐ।

सजदे का सहीह तरीक़ा

- क़ौमह के बाद اَللّٰهُ اَكْبَرْ (अल्लाहु अकबर) केहते हुवे सजदे मे जाओ, सजदे का मस्नून तरीक़ा ये हे के सजदे मे जाते वक़्त कमर सीधी रखते हुवे सब से पेहले घुटनें मोड़ कर ज़मीन पर रख्खो, फिर सीने को ज़मीन की तरफ झुकाते हुवे पेहले दोनों हथेलियां ज़मीन पर रख्खो, इस के बाद नाक ओर पेशानी को हथेलियों के बीच मे रख दो।
- सजदे मे हाथ की उंग्लियां मिलाकर क़िब्ले के रुख पर रख्खो।
- हाथ के दोनों अंगूठे कान की लौ के बराबर रख्खो।
- कोहनियां ज़मीन से ओर रानों से अलग रख्खो, जमाअत की नमाज़ मे पड़ोसी को तकलीफ न हो इस का भी खयाल रख्खो।
- अपने पेट ओर रान को अलग रख्खो, आपस मे मिलाओ नहीं।
- ओरत ज़मीन से बिल्कुल चिमट कर सजदह करेगी, न तो कोहनियां जमीन से अलग रख्खेगी ओर न पेट को रान से अलग रख्खेगी बल्के दोनों को मिलाऐ रख्खेगी ओर पैरों को बिछाऐ रख्खेगी।
- पैरों की उंग्लियां मोड़ कर क़िब्ला रुख रख्खो, बग़ैर उजर के उंग्लियों के सीरे ज़मीन की तरफ रखना सहीह नहीं हे।
- कम से कम तीन मर्तबह سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى (सुब्हान रब्बियल् अअला) पढ़ो।

- सजदे के दौरान नज़रें अपनी नाक के बांसों पर रख्खो।
- सजदे के दौरान इस का खूब खयाल रख्खो के दोनों पैर ज़मीन से ऊपर उठे हुवे न रहें, वरना नमाज़ फासिद होने का खतरा हे।

जल्से (दो सजदों के दरमियान) की हालत :

- फिर اَللّٰهُ اَكْبَرْ (अल्लाहु अकबर) केहते हुवे सजदे से सर उठाओ।
- उठते वक़्त पेहले पेशानी उठाओ फिर हथेलियां उठाओ।
- फिर बायां क़दम बिछा कर उस पर बैठ जाओ ओर दायां क़दम खड़ा रख कर उस की उंग्लियों को क़िब्ला रुख कर लो। दोनों क़दम खड़े रख कर ऐड़ियों पर बैठना सहीह नहीं हे।
- <u>ओरत इस तरह बैठेगी के दोनों क़दम बिछा कर दाऐं तरफ निकालेगी ओर बाऐं पहलू पर बैठ जाऐगी।</u>
- जलसे के दौरान नज़रें अपनी गोद पर रख्खो।
- बैठते वक़्त अपने दोनों हाथ रान पर इस तरह रख्खो के उंग्लियां क़िब्ला रुख रहे, घुटनों पर मत रख्खो।
- जल्से मे कम से कम ऐक मर्तबह सुब्हानल्लाह केहने के बराबर इतमीनान से बैठो।

दूसरा सजदह :

- फिर اَللّٰهُ اَكْبَرْ (अल्लाहु अकबर) केहते हुवे दूसरा सजदह करो।
- सजदे मे जाते हुवे पेहले दोनों हथेलियां ज़मीन पर रख्खो, फिर नाक ओर पेशानी रख्खो।
- दूसरे सजदे मे वही सब बातें हें जो पेहले सजदे की बयान की हे।

सजदे से उठने की हालत :

- जब दूसरी रकअत के लिये सजदे से उठो तो पेहले पेशानी ज़मीन से उठाओ फिर दोनों हथेलियां ओर फिर दोनों घुटनें उठाओ।
- उठते वक़्त क़दमों के बल उठो, बग़ैर उज़र के ज़मीन का सहारा न लो।

दूसरी रकअत :

- ख़ड़े होने के बाद सब से पेहले बिस्मिल्लाह पढ़ो, फिर सूरह अल फातिहा ओर फिर दूसरी कोई सूरत या आयतें पढ़ो।
- अगर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहे हो तो दूसरी रकअत मे क़ियाम मे सिवाऐ आमीन के कुछ न पढ़ो।
- दूसरी रकअत मे रुकूअ, क़ौमह, सजदह, ओर जल्सह सब उसी तरह करो जिस तरह पेहली रकअत मे किया हे।

क़अदे की हालत :

- दो रकआत मुकम्मल करने के बाद दोज़ानू इस तरह बैठ जाओ जिस तरह दो सजदों के दरमियान बेठने का तरीक़ा बतलाया गया हे।
- फिर पूरी अत्तहिय्यात पढ़ो।
- अत्तहिय्यात मे जब "अश्हदु अल्ला इलाह" पर पोंहचो तो दाऐं हाथ के अंगूठे ओर तीन उंग्लियों को बंद कर के शहादत की उंग्ली को इतना उठाओ के क़िब्ला रुख हो जाऐ, आस्मान की तरफ न होने पाऐ; ओर "इल्लल्लाह" पर पोंहचो तो नीचे

झुका दो।

- ओर हाथ इसी हालत मे सलाम फेरने तक रख्खो।
- अगर आगे ओर रकआत पढ़नी हो तो अत्तहिय्यात के बाद फौरन तीसरी रकअत के लिये ख़डे हो जाओ। देर बिल्कुल न लगाओ।

तीसरी ओर चौथी रकअत :

- तीसरी रकअत के लिये ख़ड़े होने के बाद सब से पेहले बिस्मिल्लाह, फिर सूरह अल फातिह़ा, फिर कोई ओर सूरत या आयतें पढ़ो। फिर रुकूअ, क़ौमह, सजदह, जल्सह सब उसी तरह करो जेसे पेहले बयान किया गया हे।
- इस के बाद चौथी रकअत भी इसी तरह पढ़ो जिस तरह तीसरी रकअत पढ़ी हे।
- अगर आप फर्ज़ नमाज़ बग़ैर जमाअत के अकेले पढ़ रहे हों तो तीसरी ओर चौथी रकआत मे सूरह अल फातिह़ा पढ़ने के बाद रुकूअ कर लो, फातिह़ा से आगे कोई सूरत या आयतें मत पढ़ो।
- अगर आप जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ रहे हों तो तीसरी ओर चौथी रकअत के क़ियाम मे कुछ भी मत पढ़ो।

आखरी क़अदह :

- आखरी क़अदह भी उसी तरह करो जिस तरह पेहला क़अदह किया हे।
- आखरी क़अदह मे अत्तहिय्यात के बाद दुरूदे इब्राहीम पढ़ो।
- इस के बाद दुआऐ माषूरह पढ़ो।

नोट : जिस क़अदे के बाद सलाम फेरना हो वो आखरी क़अदह हे।

सलाम :

- क़अदे के खत्म पर पेहले दाऐं तरफ फिर बाऐं तरफ सर घुमाते हुवे اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ (अस्सलामु अलय्कुम व - रह़्मतुल्लाह) कहो।
- सलाम फेरते वक़्त गरदन इतनी मोड़ों के पीछे से रुखसार नज़र आ सके।
- चेहरा घुमाते वक़्त नज़र कंधों पर रख्खो।
- सलाम फेरते वक़्त दाऐं बाऐं नमाज़ मे शामिल इन्सान, जिन्नात ओर फरिश्तों सब को सलाम करने की निय्यत करो।
- अकेले नमाज़ पढ़ रहे हों तो सिर्फ ह़िफाज़त के फरिश्तों को सलाम करने की निय्यत करो।
- बेहतर हे के दूसरे सलाम की आवाज़ पेहले सलाम से पस्त करो।

फर्ज़ नमाज़ों के बाद की चंद मस्नून दुआऐं ओर वज़ाइफ जानने ओर पढ़ने के लिये 👉 यहां 👉 क्लिक कीजिये।

नमाज़ के अंदर पढ़े जाने वाले कलिमात (षना, अत्तह़िय्यात, दुरूद, दुआ वग़ैरह) को याद करने, सहीह करने या उन का तरजमह याद करने के लिये 👉 यहां 👉 क्लिक कीजिये।

किसी दीनी मस्अला मालूम करने के लिये 👉 यहां 👉 क्लिक करें।

खत्म शुद

(मुफ्ती) असरारुलह़क़ हनफी ब्यारवी

11 रजब 1442 मुताबिक़ 24 फरवरी 2021 बरोज़ बुध